डॉ० राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय

अवध अभिव्यक्ति

विश्वविद्यालय की ई–मासिक पत्रिका

15,अप्रैल 2020
वर्षः 03, अंक–06

डॉ0 आम्बेडकर के जीवन आदर्शों को आत्मसात करने की जरूरतः कुलपति

सभी भारतवासी महामारी से अनुशासित होकर मुकाबला करेंगे : प्रो0 दीक्षित 04

कोरोना से बचाव का रास्ता सोशल डिस्टेंसिंग एवं साफ–सफाई हैः कुलपति

08 अप्रैल। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के तकनीकी संस्थान द्वारा 'सिग्नीफिकेन्ट रोल ऑफ ई–एजुकेशन थ्रू सोशल डिस्टेंसिंग ड्यूरिंग लॉकडाउन ऑफ कोविड–19 पैंडेमिक' विषय पर 08–09 अप्रैल, 2020 को जूम क्लाउड मीटिंग एप पर वीडियो कांफ्रेसिंग के माध्यम से दो दिवसीय नेशनल वेबिनार का आयोजन किया गया।

वेबिनार के उद्घाटन में विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित ने कोरोना जैसी महामारी के प्रति सचेत करते हुए कहा कि भारत सरकार के दिए हुए नियमों को समाज के हर वर्ग को विशेषकर युवा वर्ग जिसमें छात्र, शिक्षक एवं सामजिक कार्यकर्ता हैं, उन्हें सूझबूझ का परिचय देते हुए इस महामारी को हराना है। आज कोरोना पूरे विश्व के लिए एक बड़ा संकट बन गया है। इसके दुष्प्रभाव से विश्व का हर क्षेत्र प्रभावित है। कुलपति ने कहा कि कोरोना से बचाव का रास्ता सोशल डिस्टेंसिंग एवं साफ–सफाई है। इसी वजह से निदान के लिए स्कूल, कॉलेज एवं सरकारी कार्यालय बंद किये गये है। छात्र देश का भविष्य होता है। उनका समय पर पाठ्यक्रम एवं परीक्षा समाप्त हो और परिणाम समय पर घोषित हो यह देश और विश्वविद्यालय का प्रथम दायित्व होता है। इसके लिए ऑनलाइन लर्निंग छात्रों के लिए एक नया अनुभव है। कुलपति ने कहा कि अवध विश्वविद्यालय आवासीय परिसर में संचालित सभी विभागों के व्हाट्सएप ग्रुप बने है जिससे छात्र और शिक्षक जुड़े है और विषय सम्बंधित विस्तृत परिचर्चा कर रहे है और सभी व्हाट्सअप ग्रुप में मैं स्वयं भी जुडा हूं। इसके साथ ही गूगल क्लास, यूट्यूब, स्काईप, मैसेंजर, ई–मेल आदि कई ऑनलाइन एप से भी पढ़ाई की जा रही है। उन्होंने अपील की कि इस समय अपने बौद्धिकता का परिचय देते हुए युवाओं को राष्ट्र के निर्माण में तनमन से जुड़ना चाहिए।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एमिटी विश्वविद्यालय, गुरूग्राम के कुलपति प्रो0 प्रीतम बाबू शर्मा ने कहा कि संगोष्ठी का यह विषय आने वाले समय में मील का पत्थर साबित होगा। ऐसे समयानुरूप विषय के लिए विश्वविद्यालय के कुलपति की प्रशंसा करते हुए कहा कि आज आप भारत के पहले बुद्धिजीवी है जो कोरोना महामारी के शिक्षा पर पड़ने वाले प्रभाव को खत्म करने की पहल की है। कुलपति का ध्यान आकृष्ट कराते हुए प्रो0 शर्मा ने कहा कि नवाचार तकनीक को अपने यहां होने वाली परीक्षा में अवश्य उपयोग करेंगे और अन्य विश्वविद्यालयों के लिए उदाहरण स्वरूप अवध विश्वविद्यालय को प्रस्तुत करेंगे।

वेबिनार में एचबीटीयू के प्रो0 रघुराज ने कहा कि लॉकडाउन की स्थिति में भी बैंकिंग, मेडिकल, पुलिस, जैसे विभाग दिन रात काम कर रहे है। शिक्षा विभाग में नवाचार तकनीकी का समावेशी उपयोग शिक्षक छात्र एवं अधिकारियों द्वारा किया जा रहा है जो एक शिक्षा की व्यवहारिक विधि से अलग है लेकिन आज के कोरोना के समय की सबसे उपयोगी एवं सहज विधि भी है। लखनऊ विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ0 विनोद कुमार सिंह ने अपने उदबोधन में कहा कि शिक्षा पद्धति में नवाचार तकनीकों को प्रमुखता से शामिल करते हुए सामान्य मेडिसिन, कानून, नैतिकता, राष्ट्र के प्रति कर्तव्य, आदि का भी अध्ययन कराना चाहिए। वेबिनार में महाराजा सूरजमल बृज विश्वविद्यालय के परीक्षा नियंत्रक

डॉ0 अरुण कुमार पांडेय ने कहा कि आज नवाचार तकनीक ने शिक्षा के क्षेत्र के साथ साथ हमारे जीवन को जीने के लिए भी आसान कर दिया है। संगोष्ठी में संस्थान के निदेशक प्रो0 रमापति मिश्र ने कहा कि लॉकडाउन के बावजूद भी संस्थान के शिक्षक अपने यूट्यूब चैनल, जूम क्लाउड मीटिंग एप, मूडल प्लेटफार्म से, कक्षाओं के व्हाट्सअप ग्रुप बनाकर और गूगल क्लासरूम एप से पठन पाठन निरन्तर कर रहे है।

समापन सत्र की मुख्य अतिथि डॉ0 आंबेडकर इंस्टिट्यूट बेंगलूर की प्रो0 शैलजा ने कहा कि यह नेशनल वेबिनार लोगों को नवाचार तकनीक से जोड़ने का एक आसान तरीका है। इसके माध्यम से नई तकनीक का प्रयोग करके अधिक से अधिक छात्रों को इसका फायदा मिल सकता है। उन्होंने सभी प्रतिभागियों को ई–लर्निंग का प्रयोग सदैव करने की बात कहीं। अध्यक्षता कर रहे विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 मनोज दीक्षित ने विश्वविद्यालय एवं अन्य शैक्षणिक संस्थानों को ऑनलाइन परीक्षा व्यवस्था को लागू करने की सलाह देते हुए इसके पहलुओं को समझने की बात कही।

वेबिनार की मुख्य वक्ता उत्तर प्रदेश तकनीकी शिक्षा की प्रमुख सचिव सुश्री राधा एस0 चौहान ने अपने संदेश के माध्यम से कहा कि कोरोना वायरस की महामारी को रोकने के लिए केन्द्र व राज्य सरकारें गंभीर हैं। लॉकडाउन में शिक्षण संस्थानों द्वारा वर्क फ्राम होम के तहत शिक्षक अपने दायित्वों का निर्वहन

कर रहे है। ऑनलाइन विधि से विश्वविद्यालय ने दो दिवसीय नेशनल वेबिनार का आयोजन किया, यह सुन्दर पहल है।

तकनीकी सत्र में विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति प्रो0 एस0एन0 शुक्ला ने कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में छात्र हित के लिए ऑनलाइन परीक्षा का भी कोई नया आसान विकल्प विकसित करने की आवश्यकता है। विषम परिस्थितियों में ऑनलाइन माध्यम से कार्य को संपादित किया जा सकता है। एच0बी0टी0यू0, कानपुर के प्रो0 नरेंद्र कोहली ने ऑनलाइन एजुकेशन के लिए कई विकल्प सुझाए जैसे गूगल डुओ, ऑनलाइन ब्लैकबोर्ड, साथ ही इस पर विचार करने को कहा कि गाँव के छात्रों के लिए भी ऑनलाइन शिक्षा कैसे उपलब्ध करायी जाए। राजकीय इंजीनियरिंग कॉलेज, आजमगढ के निदेशक प्रो0एस0 पी0 शुक्ला ने छात्रों को एनपीटीएल का प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया। आईईटी, लखनऊ की प्रो0 पारुल यादव ने कहा कि ऑनलाइन लर्निंग के माध्यम से क्लास चलायी जा सकती है लेकिन छात्रों का प्रैक्टिकल और परीक्षा भी महवपूर्ण विषय है वीडियो कांफ्रेंसिंग से छात्रों का प्रैक्टिकल करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। माई परफेक्टिव के टेक्निकल एक्सपर्ट गौरव सिंह ने आर्टिफिशल इंटेलिजेन्स डिजिटल लर्निंग प्लेटफार्म के विषय पर जानकारी प्रदान की।

सत्र में एडोब एजुकेशन के टेक्निकल एक्स्पर्ट सुपरीथ नागराजू ने लॉकडाउन में एडोब के सॉफ्ट्वेयर की मदद से, एजुकेशन के लिए सभी विकल्पों को प्रजेंटेशन के माध्यम से प्रस्तुत किया। आईईटी लखनऊ के अभिषेक नागर जी ने कई टूल्स बताए जो आईईटी, लखनऊ में प्रयोग में लाए जा रहे है जिसमें ऑनलाइन लर्निंग एवं टीचिंग के लिए गूगल क्लासरूम एवं गूगल मीट की जोड़ी का प्रयोग किया जा सकता है। आजमगढ़ के संस्थान के डॉ0 चिन्तननिधि ने ऑनलाइन शिक्षा के लिए मूडल को बेहतर विकल्प बताया जिससे छात्रों को नोट्स , सेशनल व लेक्चर में बहुत आसानी हो जाती है। कार्यक्रम में संस्थान के निदेशक प्रो0 रमापति मिश्र ने अतिथियों को दो दिवसीय नेशनल वेबिनार के उद्देश्य से परिचित कराया एवं सभी के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम के समन्वयक इं0 विनीत सिंह ने बताया की इस सेमिनार के माध्यम से ई–प्लेटफॉर्म से विश्वविद्यालय की शिक्षा व्यवस्था को अनवरत बनाए रखने पर प्रयोजनपरक परिचर्चा की। तकनीकी सत्र में इं0 मनीष सिंह, इ0 नवीन चंद्र, इं0 विमलेश सिंह, इं0 परिमल तिवारी, इं0 रमेश मिश्र, इं0 आशुतोष मिश्र, इं0 अखिलेश मौर्य द्वारा प्रतिभागियों को नवाचार तकनीकी के भिन्न पहुलओं पर लाइव समस्याओं का समाधान किया। कार्यक्रम के संयोजक इं0 पारितोष त्रिपाठी ने बताया कि पूरे देश से 232 प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया।

कार्यक्रम के समापन पर मुख्य अतिथि, कुलपति एवं उपकुलसचिव विनय सिंह के नेतृत्व प्रतिभागियों को ऑनलाइन सर्टिफिकेट का वितरण किया गया। कार्यक्रम के संयोजक इ0 परितोष त्रिपाठी ने बताया कि पूरे देश से 350 प्रतिभागियों ने रजिस्ट्रेशन किया था जिनमे से 232 प्रतिभागियों ने जूम लाइव के द्वारा ही प्रतिभाग किया। इस अवसर मुख्य नियंता प्रो0 आर0एन0 राय, परीक्षा नियंत्रक उमानाथ, उपकुलसचिव विनय कुमार सिंह, सहित संस्थान के शिक्षक भी लाइव उपस्थित रहे।

विश्वविद्यालय ने प्रधानमंत्री राहत कोष में भेजी धनराशि

04 अप्रैल। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय ने कोरोना वायरस के संक्रमण की इस महामारी से निपटने के लिए प्रधानमंत्री राहत कोष में 7 लाख 62 हजार 534 रूपये आरटीजीएस/नेफ्ट के माध्यम से भेज दिया गया है। दूसरे चरण में प्रदेश मुख्यमंत्री राहत कोष में लगभग 04 लाख देने का संकल्प लिया गया है। वहीं दूसरी ओर देशव्यापी लॉकडाउन में परिसर के अधिकारियों, नियमित शिक्षकों, संविदा शिक्षकों, अतिथि प्रवक्ताओं, कर्मचारियों, सुरक्षा कर्मियों एवं सफाई कर्मियों का माह मार्च का वेतन बिना कटौती किए जारी कर दिया गया है।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 मनोज दीक्षित ने बताया कि कोरोना वायरस के संक्रमण के कारण देश संकट के दौर से गुजर रहा है। केन्द्र और राज्य सरकार द्वारा इस महामारी से निपटने के लिए कोई कसर नही छोड़ी जा रही है। प्रदेश सरकार आम नागरिकों के स्वास्थ्य, सुरक्षा एवं उनके भरण–पोषण के प्रति बेहद सजग भी है। इसलिए हम सभी का दायित्व है कि आपदा की घड़ी में सरकार को सहयोग प्रदान करें।

विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति प्रो0 एस0 एन0 शुक्ल ने बताया कि कोविड–19 की इस आपदा से निपटने के लिए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 मनोज दीक्षित ने अपने एक महीने के वेतन में से 15 दिन का वेतन स्वेच्छा से प्रदान किया है। इसी क्रम में विश्वविद्यालय के अधिकारियों, शिक्षकों एवं कर्मचारियों ने भी स्वेच्छा से अपने वेतन से एक दिन का वेतन दिया है। प्रथम चरण में प्रधानमंत्री राहत कोष में 7 लाख 62 हजार 534 रूपये की राशि प्रेषित की जा चुकी है। दूसरे चरण में उत्तर प्रदेश मुख्यमंत्री राहत कोष में लगभग 04 लाख धनराशि भेजी जायेगी।

प्रति कुलपति ने बताया कि परिसर के समस्त अधिकारियों, नियमित शिक्षकों, संविदा शिक्षकों, अतिथि प्रवक्ता एवं कर्मचारियों को वेतन बिना किसी कटौती किये जारी कर दिया गया है। इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय में एजेंसी द्वारा नियुक्त सुरक्षा कर्मियों एवं सफाई कर्मियों का वेतन उनकी सेवा प्रदाता एजेंसी को जारी कर दिया गया है। एजेंसी को सुरक्षा कर्मियों एवं सफाई कर्मियों का वेतन भुगतान करने का आदेश प्रदान कर दिया गया है।

प्रो0 शुक्ल ने बताया कि विश्वविद्यालय से सम्बद्ध स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों एवं कर्मचारियों को भी पूर्व में वेतन भुगतान करने का आदेश प्रदान कर दिया गया है।

महामारी से बचाव के लिए जागरूकता जरूरी

03 अप्रैल। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय परिसर के विभिन्न विभागों के विभागाध्यक्ष, निदेशक, समन्वयक, समस्त शिक्षकगण एवं कर्मचारीगण ने कोरोना वायरस के रोकथाम के लिए छात्र–छात्राओं, अभिभावकों एवं आम नागरिक से अपील की हैं कि कोरोना वायरस (कोविड–19) द्वारा फैल रही विश्वव्यापी महामारी से बचने के लिये हम सभी को सावधान रहने की जरूरत है।

केंद्र सरकार, राज्य सरकार एवं विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा चलाए जा रहे विशेष अभियान का हिस्सा बनकर देश के सच्चे नागरिक के रुप में कार्य करना है। लॉकडाउन में समय–समय पर जारी दिशा निर्देशों का कड़ाई के साथ पालन करना है। साफ–सफाई एवं एक दूसरे से समुचित शारीरिक दूरी बनाये रखनी है। अति आवयश्क सामग्री को खरीदने के लिये घर से केवल एक ही व्यक्ति मॉस्क के साथ जिला प्रशासन द्वारा निर्देशित नियमानुसार ही घर से निकले। कोशिश करें कि प्रतिदिन घर से न निकलें और न ही किसी अन्य सदस्य को निकलने दें।

विश्वविद्यालय परिवार ने अपील की है कि कोरोना वायरस की इस महामारी से निपटने के लिए हमारे चिकित्सक, स्वास्थ्य अधिकारी एवं कर्मचारी, साफ–सफाई से जुड़े सभी स्टाफकर्मी, पुलिस, आर्मी, सुरक्षा से जुड़े समस्त अधिकारी एवं कर्मचारियों के निर्देशों का पालन करें एवं उनका सहयोग एवं सम्मान करें। गरीब, मजदूर, लाचार एवं मजबूर की सभी अपने–अपने स्तर से सहायता करें। यद्यपि इस कार्य में हमारी सरकारें, स्वयं सेवी संगठन, विभिन्न संगठन तथा व्यक्ति विशेष अपना–अपना दायित्व निभा रहे हैं। हम सभी को एक दूसरे से प्रेरणा लेनी है।

मंथन

15 अप्रैल, 2020: बैशाख, कृष्ण पक्ष, नवमी, विक्रम संवत् 2077

' स्वास्थ्य ही सबसे बड़ा धन है '

मिलकर ही देशवासी कोरोना से जीतेंगे जंग

कोरोना वायरस का खतरा भारत में लगातार बढ़ता जा रहा है, वहीं भारत सरकार कोरोना के संकट पर पूरी तरह मुस्तैद है। संक्रमण को पूरी तरह से रोकने के लिए देश भर में लॉकडाउन लागू किया गया। स्वास्थ्य मंत्रालय ने कहा है कि वर्तमान हालात में सामाजिक दूरी काफी अहम है, केन्द्र एवं राज्य सरकारें कोरोना वायरस से उत्पन्न हर चुनौती और हर खतरे को कम करने के लिए सभी आवश्यक कदम उठाने हेतु निरंतर काम कर रही हैं। सभी आपातकालीन सेवाएं चौबीसों घंटे उपलब्ध हैं। कोरोना वायरस के प्रसार को रोकने में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका नागरिकों की है, ऐसे में आज हर नागरिक की यह जिम्मेदारी है कि वह चिकित्सकों द्वारा जारी सलाह के अनुसार सावधानी बरते और बताए गए सभी स्वास्थ्य सुरक्षा नियमों साबुन से हाथ धोना, मॉस्क का उपयोग, सोशल डिस्टेंसिंग आदि का पालन करे। कोविड–19 एक नया वायरस है। इसका अब तक कोई टीका नहीं बना है। लेकिन बुनियादी स्वच्छता और रोकथाम के उपाय बहुत मायने रखते हैं। अगर इस वायरस का संक्रमण सामान्य आबादी में फैलता है, तो रोकथाम के उपाय बेहद महत्वपूर्ण हो जाते हैं, क्योंकि अधिसंख्य राज्यों में स्वास्थ्य प्रणाली बहुत मजबूत नहीं है। तेज शहरीकरण ने कमजोर शहरी स्वास्थ्य प्रणालियों पर जिस तरह दबाव बनाया है, उसमें महामारी को कैसे रोकना है, सिर्फ यह जानना पर्याप्त नहीं है बल्कि लगातार सतर्कता और क्रियान्वयन ही एकमात्र उपाय है। लॉकडाउन ने जीवन शैली ही नहीं बदली है बल्कि पठन–पाठन का तरीका भी बदल रहा है। सरकारी कामकाज की शैली परिवर्तित हो चुकी है। सोशल नेटवर्किंग और क्लाउड मीटिंग एप की लोकप्रियता चरम पर है। सामाजिक दूरी बनाए रखने की जरूरत के मद्देनजर सामाजिक संवाद, त्योहारों का जश्न और यहां तक कि शोक मनाने के नये तरीके भी लोगों ने सीखे हैं। कोरोना वायरस महामारी के वैश्विक प्रसार के साथ–साथ हर समाज की विसंगतियां भी सामने आ रही हैं, चाहे वह विकसित समाज हो या विकासशील समाज। वैश्विक स्तर पर संक्रमित लोगों की संख्या दिनोंदिन बढ़ती जा रही है और इससे मरने वालों की संख्या भी लाख से ज्यादा हो गई है। निश्चित ही हम सभी के लिए यह एक मुश्किल घड़ी है लेकिन साथ मिलकर हम यह मुश्किल घड़ी भी पार कर सकते हैं।

समग्र विश्व के लिए बड़ा संकट है कोविड–19

अमन कश्यप

विश्व स्वास्थ्य संगठन, स्वास्थ्य के लिए संयुक्त राष्ट्र की विशेषज्ञ एजेंसी है। संयुक्त राष्ट्र के द्वारा विश्व स्वास्थ्य संगठन की स्थापना 7 अप्रैल 1948 को की गयी। इसका मुख्यालय स्विट्जरलैंड के जिनेवा शहर में है। यह संगठन लगभग 200 देशों के साथ मिलकर दुनिया को रोग मुक्त करने के लिए प्रयासरत है। विश्व स्वास्थ्य दिवस को विश्व स्वास्थ्य संगठन की स्थापना दिवस के रूप में भी मनाया जाता है। प्रत्येक वर्ष विश्व स्वास्थ्य दिवस के लिए एक थीम को चुना जाता है इस वर्ष का थीम 'सपोर्ट नर्सेज एवं मिडवाइफ' है। इसमें कोई दो राय नहीं है की स्वास्थ्य सेवाओं में नर्सों और दाईयों का योगदान अतुलनीय रहा है। वर्तमान में जब पूरा विश्व कोरोना महामारी के चपेट में है तो ऐसी स्थिति में स्वास्थ्यकर्मियों की भूमिका रणभूमि के योद्धाओं से कम नहीं है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने दुनिया के देशों के साथ मिलकर विश्व को रोग मुक्त करने का प्रण लिया है। सार्स, इबोला, इन्फ्लूएंजा H1N1 इत्यादि महामारी को फैलने से रोकने तथा इसके उपचार ढूंढने के लिए विश्व स्वास्थ संगठन ने अपनी जिम्मेदारी निभायी है। चेचक की रोकथाम विश्व स्वास्थ्य संगठन की बहुत बड़ी उपलब्धियों में से एक है।

आज विश्व की बहुत बड़ी जनसंख्या कोविड–19 की चपेट में है, हजारों की संख्या में लोग अपने प्राण गवा चुके हैं। चीन के वुहान शहर मे कोविड–19 का पहला मामला सामने आया इसके बाद यह जंगल की आग की तरह सभी महाद्वीपों में फैल गया। अभी तक कोविड–19 के कोई वैक्सीन की खोज नहीं हुई है, पूरे विश्व के वैज्ञानिक सहित विश्व स्वास्थ संगठन के वैज्ञानिक भी इस बीमारी के हल ढूंढने में प्रयासरत है। विश्व स्वास्थ्य संगठन तमाम देशों के स्वास्थ्य पदाधिकारियों के लगातार संपर्क में है और कोविड–19 से संबंधित अद्यतन सूचनाएं इनके साथ साझा कर रहे हैं।

भारत में इन स्वास्थ्य कर्मियों को सम्मान देने के लिए प्रधानमंत्री मोदी के आह्वान पर पूरे देश ने ताली, थाली, घंटी एवं शंख बजाकर कोविड–19 के खिलाफ एकजुटता दिखाई। विश्व स्वास्थ्य दिवस को मनाने का एक तरीका यह भी है कि स्वास्थ्य कर्मियों का सम्मान किया जाए। कुछ भटके हुए लोगों द्वारा स्वास्थ्य कर्मियों पर किया गया हमला बहुत शर्मनाक है।

इंसानों को रोग मुक्त रहने के लिए प्रोत्साहित करना आवश्यक है। संतुलित भोजन, नियमित व्यायाम इन सभी आदतों को मानव को अपने जीवन में उतारना होगा। अब समय आ गया है कि प्रकृति के साथ छेड़छाड़ ना करें। खुद जागरूक रहें और दूसरों को भी जागरूक करने में मदद करें।

जन–अभिव्यक्ति

ई–मासिक पत्रिका अवध अभिव्यक्ति विश्वविद्यालय परिसर का लेखा–जोखा प्रस्तुत करती है। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस और भगत सिंह पर लेख बहुत ही ज्ञानदायी और रोचक लगे।

–आशुतोष

अन्याय और शोषण के विरूद्ध आजीवन लड़ते रहे बाबा साहब

युक्ति गुप्ता

भारतीय संविधान निर्माता बाबा साहब डॉ भीमराव आंबेडकर का जन्म 14 अप्रैल 1891में मध्यप्रदेश के महू में पिता रामजी मालोजी सकपाल और मां भीमाबाई की संतान के रूप में हुआ। उनके पिता राम जी ब्रिटिश सेना में एक सैनिक थे। भीमराव अंबेडकर महार जाति के थे जिसे लोग बेहद ही निचले तबके का मानते थे। उनका परिवार मराठी था जो महाराष्ट्र के रत्नागिरी जिले में अंबावड़ी गांव में था। वे सेना से रिटायर होने के बाद परिवार को लेकर सतारा चले गए। कुछ समय बाद अंबेडकर की माता भीमाबाई का बीमारी के चलते देहांत हो गया।

आस पड़ोस के बच्चों को स्कूल जाते देख भीमराव का मन भी स्कूल जाने को करता था। उन्होंने अपने पिता से कहा कि उन्हें भी स्कूल जाना है लेकिन अछूत होने के कारण उन्हें स्कूल में दाखिला मिल पाना आसान नहीं था। मजबूर होकर उनके पिता एक ब्रिटिश सैनिक अधिकारी के पास गए और उनसे विनती की कि उन्होंने जीवन भर सरकार की सेवा की है और बदले में उनके बच्चों को स्कूल में प्रवेश न मिल पाना एक बहुत बड़ा अन्याय है। इसके बाद उस अधिकारी ने उनके बच्चों का दाखिला स्कूल में करवा दिया। लेकिन वहां आंबेडकर को छुआछूत के ऐसे कड़वे अनुभव हुए जो वह जीवन भर नहीं भुला पाए। आंबेडकर स्कूल तो जाते थे लेकिन दलित बच्चों को कक्षा के बाहर बैठाया जाता था और शिक्षक उन पर ध्यान भी नहीं देते थे। छुआछूत की वजह से स्कूल में उनको मटके से पानी लेकर भी पीना मना था। चपरासी के हाथों उन्हें दूर से पानी हाथों की अंजुलि से पीना पड़ता था।

आंबेडकर के सूबेदार पिता नौकरी की तलाश में मुंबई जाकर बस गए और वहीं के मराठा स्कूल में उनका दाखिला करा दिया। यहां पर उन्होंने बहुत सी किताबों का अध्ययन किया। अपनी पढ़ाई के अलावा वह और भी ग्रंथ और किताबें पढ़ने लगे। भीम के पिता ने कर्ज लेकर उन्हें मुंबई में एलफिंस्टन हाई स्कूल में भेजा। वहां से उन्होंने हाईस्कूल पास किया। इसी बीच 16 वर्ष की उम्र में उनका विवाह 9 वर्ष की रमाबाई के साथ कर दिया गया। कॉलेज की पढ़ाई के लिए उन्होंने एलफिंस्टन कॉलेज में एडमिशन लिया था। पढ़ाई के दौरान उनकी मुलाकात एक शिक्षक से हुई जिनका नाम कलुस्कर था। वे आंबेडकर के बेबाक अंदाज और पढ़ाई के प्रति जुनून देखकर बहुत ही प्रभावित हुए और वह भीमराव को बड़ोदरा के शिक्षा प्रेमी महाराज के पास लेकर गए और उन्होंने आंबेडकर से कुछ सवाल किए जिसका उन्होंने एकदम सही उत्तर दिया। कुछ वर्ष बाद बड़ोदरा के महाराज ने आंबेडकर समेत चार लड़कों को छात्रवृत्ति देकर कोलंबिया यूनिवर्सिटी, अमेरिका भेजने का निर्णय लिया। चार साल बाद वे भारत वापस आए और बड़ोदरा के महाराज के यहां मिलिट्री सेक्रेटरी के रूप में काम करना शुरू किया। कुछ समय बाद वहां से उन्होंने नौकरी छोड़ दी और सन 1919 में वह लंदन चले गए जहां अथक परिश्रम और मेहनत से उन्होंने वहां पर एमएससी, डीएससी तथा बैरिस्टर की डिग्री प्राप्त की। सन् 1923 में वह भारत वापस लौट आए और वकालत शुरू कर दी थी। वकालत करते हुए उन्होंने देखा कि दलितों का कितनी बुरी तरह से शोषण किया जा रहा है। तब से उन्होंने अपना जीवन समाज में व्याप्त असमानता को खत्म करने के लिए समर्पित कर दिया।

डॉ0 भीमराव आंबेडकर ना केवल समाज में सदियों से दबाए गए दलित और अछूत लोगों के लिए लड़ाई लड़ी बल्कि भिन्नताओं से भरे भारत को एक संविधान में बांधने का कार्य किया। आंबेडकर ने बहुत ही कम समय में भारत को दुनिया का सबसे बड़ा लिखित संविधान बना कर दिया। वंचितों, शोषितों व दलितो के मसीहा डॉ भीमराव आंबेडकर 6 दिसंबर 1956 को कई बीमारियों की वजह से परिनिर्वाण को प्राप्त हुए। डॉ0 आंबेडकर का कहना था की जीवन लंबा होने के बजाय महान होना चाहिए। वो ऐसे धर्म को मानते हैं जो स्वतंत्रता, समानता और भाईचारा सिखाए।

सामाजिक समरसता के प्रणेता हैं महात्मा फुले

डॉ0 राजेश सिंह कुशवाहा

सामाजिक परिवर्तन के लिए अनगिनत महापुरुषों ने अपना पूरा जीवन लगा दिया, उन्हीं में एक हैं ज्योतिराव गोविंदराव फुले। 19वीं सदी के एक महान भारतीय विचारक, समाज सेवी एवं लेखक महात्मा ज्योतिबा फुले का जन्म 11 अप्रैल 1827 को हुआ था।

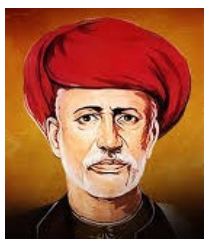

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ज्योतिबा फुले के बारे में कहा है कि सामाजिक सुधार को लेकर किए गए उनके कार्यों से काफी मदद मिली। महिलाओं की स्थिति में सुधार लाने और युवाओं के बीच शिक्षा को आगे बढ़ाने के प्रति उनकी प्रतिबद्धता अटूट थी। महात्मा फुले का परिवार कई पीढ़ी पहले सतारा से पुणे आकर फूल–मालाओं आदि बनाने का काम करने लगा था। इसलिए माली के काम में लगे ये लोग 'फुले' के नाम से जाने जाते थे। ज्योतिबा ने कुछ समय तक मराठी में अध्ययन किया, बीच में पढ़ाई छूट गई और बाद में 21 वर्ष की उम्र में अंग्रेजी की सातवीं कक्षा की पढ़ाई पूरी की। मराठी समाजसेवी ज्योतिबा फुले ने शोषित और वंचित जातियों के लिए 'दलित' शब्द को गढ़ने का काम किया था। साल 1873 के सितंबर माह में उन्होंने 'सत्य शोधक समाज' नामक संगठन का गठन किया था।

सत्य शोधक समाज के प्रमुख उद्देश्य दलितों को सामाजिक सांस्कृतिक दासता से मुक्ति दिलाना, शिक्षा के लिए प्रोत्साहित करना, सामूहिक हितों की प्राप्ति के लिए उनमें एकजुटता का भाव पैदा करना, धार्मिक एवं जाति–आधारित उत्पीड़न से मुक्ति दिलाना, पढ़े–लिखे दलित युवाओं के लिए प्रशासनिक क्षेत्र में रोजगार के अवसर उपलब्ध कराना आदि थे। मूलतः इसकी स्थापना का लक्ष्य सामाजिक परिवर्तन के घोषणापत्र को लागू करने का कार्यक्रम था।

ज्योतिबा फुले बाल–विवाह के मुखर विरोधी और विधवा–विवाह के पुरजोर समर्थक थे। वे महिला शिक्षा की खूब वकालत करते थे। यही वजह है कि 1840 में जब इनका विवाह सावित्रीबाई फुले से हुआ तो, उन्होंने अपनी पत्नी सावित्रीबाई फुले को पढने के लिए प्रेरित किया। सन 1852 में उन्होंने तीन स्कूलों की स्थापना की, लेकिन 1858 में फंड की कमी के कारण ये बंद कर दिए गए। सावित्रीबाई फुले आगे चलकर देश की पहली प्रशिक्षित महिला अध्यापिका बनीं। उन्होंने लोगों से अपने बच्चों को शिक्षा जरूर दिलाने का आह्वान किया। उन्हें भारत की नारी मुक्ति आंदोलन की पहली नेता कहा जाता है। महात्मा फुले की मृत्यु के पश्चात् उनकी पत्नी सावित्रीबाई फुले ने सत्य शोधक समाज के काम को आगे बढ़ाया।

सुविचार

एक अच्छा इंसान हर सजीव का मित्र होता हैं।

–महात्मा गांधी

आप सुधी पाठकों के विचार सादर आमंत्रित हैं।

avadhabhivyakti@gmail.com

प्रमुख संरक्षक
प्रो0 मनोज दीक्षित, कुलपति
संरक्षक
डॉ0 विजयेन्दु चतुर्वेदी, समन्वयक
प्रकाशक
रामचन्द्र अवस्थी, कुलसचिव
सम्पादक मण्डल
डॉ0 राजेश सिंह कुशवाहा
डॉ0 अनिल कुमार विश्वा
डॉ0 राज नारायण पाण्डेय
संकलन एवं सम्पादन
सौरभ, शिवाकर, सिद्धांत, साक्षी, रजनीश

Feedback
avadhabhivyakti@gmail.com

डिस्क्लेमर : ई–पत्रिका का प्रकाशन पूरी तरह से शैक्षणिक विकास को समर्पित है, इसका कोई भी व्यावसायिक हित नहीं है। सर्वाधिकार @ डॉ0 राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या।

विश्वविद्यालय परिसर को सैनेटाइज करने का निर्देश

18 मार्च। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के कौटिल्य प्रशासनिक भवन के सभागार में कोरोना वायरस के संदर्भ में सावधानी एवं बचाव को लेकर एक आपात बैठक आहूत की गई। बैठक की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो0 मनोज दीक्षित ने कोरोना वायरस के दृष्टिगत केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय एवं राज्य सरकार द्वारा जारी एडवाइजरी का स्पष्ट रूप से पालन करने के निर्देश दिए। बैठक में परीक्षा नियंत्रक ने बताया कि दिनांक 17 मार्च, 2020 को शासन स्तर की बैठक के पश्चात प्रदेश के सभी विश्वविद्यालयों के कुलपति को जारी दिशा–निर्देश के क्रम में विश्वविद्यालय की समस्त परीक्षाओं को स्थगित कर दिया गया है। प्रो0 दीक्षित ने बैठक में सम्पूर्ण विश्वविद्यालय परिसर को सैनेटाइज करने की प्रक्रिया शुरू करने का निर्देश प्रदान किया। कुलपति ने सम्पूर्ण विश्वविद्यालय परिसर को एक सप्ताह के अन्दर सैनेटाइज करने के लिए भी सम्बन्धित को यथा आवश्यक कार्यवाही सुनिश्चित करने का निर्देश दिया। सेनेटाइजेशन की इस प्रक्रिया के दौरान परिसर में छात्र–छात्राओं एवं आगन्तुकों का आवागमन पूर्णतया प्रतिबन्धित रखा जाएगा। सभी विभागों के विभागाध्यक्षों, निदेशक एवं समन्वयक को निर्देशित किया गया है कि वे तय समयावधि के भीतर पाठ्यक्रमों को पूरा करने के लिए ऑनलाइन माध्यम से अध्ययन सामग्री छात्र–छात्राओं को उपलब्ध कराने के साथ–साथ पाठ्य गतिविधियों का आनलॉइन संचालन सुनिश्चित करें।

बैठक में कुलपति ने निर्देशित किया कि पीएच0डी0 की मौखिकी परीक्षा को ऑनलाइन वीडियो कांफ्रेसिंग के द्वारा सम्पन्न कराया जाए। निर्देशानुसार मूल्यांकन भवन को सैनिटाइज करने के लिए मूल्यांकन प्रकिया को भी रोका जा रहा है। भवन को सैनिटाइज करने के उपरांत छोटे–छोटे समूहों में मूल्यांकन पुनः प्रारम्भ कराया जायेगा। कोरोना वायरस से निपटने के लिए विश्वविद्यालय प्रशासन परिसर में स्थित स्वास्थ्य केन्द्र को भी सतर्क कर दिया गया है जिससे किसी संक्रमण की स्थिति में तत्काल प्राथमिक सहायता मिल सके। इस मध्य अधिकारियों को निर्देशित किया गया है कि आवश्यक सेवाओं को छोड़कर अन्य कर्मचारियों एवं शिक्षकों को वर्क फ्राम होम सुविधा प्रदान करें। परिसर में कर्मचारियों के लिए बायोमैट्रिक डिवाइस से उपस्थिति दर्ज कराए जाने को एहतियातन रोक दिया गया है।

बैठक में प्रति कुलपति प्रो0 एस0एन0 शुक्ल, परीक्षा नियंत्रक उमानाथ, उपकुलसचिव विनय कुमार सिंह, प्रो0 आर0एन0 राय, प्रो0 आशुतोष सिन्हा, प्रो0 के0के0 वर्मा, प्रो0 जसवंत सिंह, प्रो0 नीलम पाठक, प्रो0 फारूख जमाल, प्रो0 एन0के0 तिवारी, प्रो0 एम0पी0 सिंह, प्रो0 राजीव गौड़, प्रो0 चयन कुमार मिश्र, प्रो0 एस0एस0 मिश्र, प्रो0 विनोद कुमार श्रीवास्तव, प्रो0 अनूप कुमार, प्रो0 रमापति मिश्र, डॉ0 दीप शिखा, डॉ0 नरेश चौधरी, डॉ0 विनोद चौधरी, डॉ0 शैलेन्द्र वर्मा, डॉ0 सुरेन्द्र मिश्र, डॉ0 विजयेन्दु चतुर्वेदी, डॉ0 विनय मिश्र, डॉ0 मुकेश वर्मा, डॉ0 समीर सिन्हा, गिरीश चन्द्र पंत, संजय सिंह सहित अन्य उपस्थित रहे।

डॉ0 आम्बेडकर के जीवन आदर्शों को आत्मसात करने की जरूरतः कुलपति

14 अप्रैल। देशव्यापी लॉकडाउन में डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 मनोज दीक्षित ने डॉ0 भीमराव आम्बेडकर की जयंती पर परिसर के छात्र छात्राओं को जूम क्लाउड मीटिंग एप प्लेटफॉर्म से संबोधित किया।

व्याख्यान को संबोधित करते हुए कुल. पति प्रो0 मनोज दीक्षित ने कहा कि हम सभी को डॉ0 आम्बेडकर के जीवन एवं आदर्शों को आत्मसात करने की आवश्यकता है। वे अपने समय के अर्थशास्त्री एवं विधिवेत्ता रहे है। उन्होंने आजीवन देश व समाज की सेवा की। कुलपति ने कहा कि आज कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है तो डॉ0 आम्बेडकर की ही देन है। उनके विचार आज के समय में भी उतने ही प्रासंगिक है। वे स्पष्टवादी थे और सदैव देश के हित की सोचते थे।

कुलपति ने कहा कि डॉ0 आम्बेडकर ऐसे समाज की स्थापना करना चाहते थे जहां भेद–भाव व असमानता न हो। वे आजीवन देशहित एवं समाजहित में कार्य करते रहे।

मुख्य नियंता प्रो0 आरएन राय ने कहा कि डॉ0 आम्बेडकर ने सामाजिक भेद–भाव के विरूद्ध अभियान चलाया। वे भारतीय संविधान के जनक थे और हमारे देश का यह संविधान अन्य राष्ट्रों के संविधान से सशक्त है। वे एक ऐसे सामाजिक कार्यकर्ता थे जिन्होंने अपना जीवन न्याय और समानता के लिए समर्पित कर दिया। कार्यक्रम में बी0एच0यू0 के प्रो0 कौशल किशोर मिश्र, प्रो0 अशोक शुक्ल, प्रो0 चयन कुमार मिश्र, प्रो0 रमापति मिश्र, डॉ0 विजयेन्दु चतुर्वेदी, इं0 रमेश मिश्र, इं0 पारितोष डॉ0 महेन्द्र पाल, डॉ0 बृजेश भारद्वाज, डॉ0 संजीत पांडेय, इं0 विनीत सिंह, इं0 परिमल तिवारी, इं0 आशुतोष सहित छात्र–छात्राएं शामिल रहे।

लॉकडाउन में मानसिक तनाव दूर करेंगे शिक्षक एवं विद्यार्थी

11 अप्रैल। कोविड–19 से निपटने के लिए देशव्यापी लॉकडाउन में विद्यार्थियों के मानसिक तनाव को दूर करने के लिए डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय एवं सम्बद्ध महाविद्यालयों में संचालित एमपीएच, समाजकार्य एवं मनोविज्ञान विषय के छात्र–छात्राएं फोन, ई–मेल, डिजिटल प्लेटफॉर्म एवं सोशल नेटवर्क के माध्यम से काउंसिलिंग करेंगे।

कुलपति प्रो0 दीक्षित ने बताया कि कोविड–19 के संक्रमण से हर व्यक्ति के अन्दर एक भय व्याप्त है। इस भय को निकालने के लिए मनोवैज्ञानिकों की भूमिका बढ़ जाती है। इस समय हम सभी के लिए संकट का दौर है। कोरोना वायरस के व्यापक फैलाव के कारण केन्द्र सरकार ने लॉकडाउन घोषित किया है। इस प्रकार की स्थिति हम सभी के सामने पहली बार आई है। घरों में रहकर लोग समाचार के माध्यम से कोरोना के संबंध में अत्यधिक जानकारी ले रहे हैं, सोशल मीडिया के माध्यम से तमाम तरह की सही एवं गलत सूचनाएं लोगों तक पहुंच रही हैं। इससे तनाव, अकेलापन, कोरोना फोबिया, अवसाद आदि जैसी स्थितियां उत्पन्न हो रही है। इन मानसिक बीमारियों से निपटने के लिए काउंसिलिंग की आवश्यकता है। काउंसिलिंग के माध्यम से विद्यार्थियों को अवसाद एवं तनाव से बाहर निकालने में मदद मिलेगी।

कुलपति ने कहा कि इस सन्दर्भ में विश्वविद्यालय एवं सम्बद्ध महाविद्यालयों के प्राचार्यों के साथ पूर्व में वीडियो कांफ्रेंसिंग से बैठक की जा चुकी है। कोरोना वायरस के कारण पूरा देश लॉकडाउन है ऐसी स्थिति में आम जनमानस के जीवन में ऐसी स्थिति न आये इसके लिए विश्वविद्यालय एवं सम्बद्ध महा–विद्यालय के एमपीएच, समाजकार्य एवं मनोविज्ञान के शिक्षक एवं छात्र–छात्राएं काउंसिलिंग के माध्यम से लोगों को तनाव से मुक्त करने का प्रयास करेंगे।

कार्यक्रम के बारे में समाजकार्य विभाग के डॉ0 विनय कुमार मिश्र ने बताया कि राज्य सरकार के आदेश पर विभाग के लगभग 45 छात्र–छात्राओं की सूची जिला प्रशासन को उपलब्ध करा दी गई है। किसी भी आपात स्थिति से निपटने के लिए इनकी सहायता ली जायेगी। अभी लॉकडाउन में उन सभी की फोन से काउंसिलिंग की जा रही है जिनके परिवार के सदस्य उनके घर या जनपद से बाहर होने के कारण मानसिक दबाव में है।

विद्यार्थियों को ई–लर्निंग सामग्री उपलब्ध कराने का निर्णय

29 मार्च। कोरोना वायरस के संक्रमण की रोकथाम के लिए केंद्र सरकार के द्वारा किए गए राष्ट्रव्यापी लॉकडाउन की अवधि में विश्वविद्यालय ने छात्र छात्राओं को ई–लर्निंग सामग्री उपलब्ध कराने का निर्णय लिया है। राज्य सरकार के आदेश के अनुक्रम में कुलपति प्रो0 दीक्षित ने प्रत्येक विभागाध्यक्षों, निदेशकों एवं समन्वयकों को अपने विभागों में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के डेटाबेस तैयार कर विद्यार्थियों को ऑनलाइन पाठ्य सामग्री तैयार कर उपलब्ध कराने का निर्देश दिया है। डेटाबेस के आधार पर पाठ्यक्रम वार व्हाट्सएप ग्रुप बनाकर प्रत्येक ग्रुप में संबंधित शिक्षकों के साथ–साथ कुलपति, प्रति कुलपति एवं उप कुलसचिव को भी जोड़ने का आदेश निर्गत किया गया है। कुलपति के निर्देश के क्रम में पाठ्यक्रम वार निर्मित व्हाट्सएप ग्रुप के माध्यम से विभागीय शिक्षक प्रतिदिन ई–लर्निंग कंटेंट प्रेषित कर छात्र छात्राओं को प्रायोगिक कार्यों के लिए भी टास्क देंगे तथा छात्र इसे पूरा कर अपने संबंधित ग्रुप पर भेजेंगे। विभागाध्यक्ष इस संपूर्ण प्रक्रिया पर स्वयं या किसी नामित विभागीय शिक्षक के माध्यम से निगरानी करेंगे।

प्रति कुलपति प्रो0 एस0एन0 शुक्ल ने बताया कि परिसर के समस्त विभागाध्यक्षों, निदेशकों एवं समन्वयकों को केंद्रीय स्तर पर संचालित ई–लर्निंग वेब लिंक या स्वयं प्रभा ऑनलाइन कोर्स, पीजी मूक्स, ई–पीजी पाठशाला, ई–कंटेंट कोर्स वेयर आर यूजी, नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी, शोधगंगा तथा ई–शोध सिंधु के लिंक भी व्हाट्सएप ग्रुप के माध्यम से छात्र–छात्राओं के ज्ञानार्जन के लिए लिंक करें। शोध छात्रों के लिए विश्वविद्यालय द्वारा जे–गेट प्लस का एक माह का फ्री एक्सेस प्राप्त कर लिया गया है। इसका वेब लिंक यूजरनेम एंड पासवर्ड भी डॉ0 आर.एम.एल.ऑफिसर एंड टीचर्स ग्रुप पर उपलब्ध है। प्रति कुलपति प्रो0 एस0एन0 शुक्ला ने सभी विभागाध्यक्षों से आग्रह किया है कि जिन छात्रों ने अभी तक स्वयं को विश्वविद्यालय के रक्षक एप से नहीं जोड़ा है वह अवश्य जोड़ लें। राष्ट्रीय आपदा की इस अवधि में छात्र छात्राओं की शैक्षिक गतिविधियां ई लर्निंग के माध्यम से जारी रखी जाएं छात्र–छात्राएं अपने विषय से संबंधित ई–कंटेंट को तैयार कर घर बैठे समय का सदुपयोग करें व सरकार के द्वारा समय–समय पर जारी होने वाली गाइडलाइन का अवश्य पालन करें।

वेतन भुगतान न किये जाने पर की जायेगी विधिक कार्यवाही

12 अप्रैल। कोरोना वायरस से निपटने के लिए देशव्यापी लॉकडाउन में उत्तर प्रदेश सरकार आम नागरिकों के स्वास्थ्य, सुरक्षा एवं भरण–पोषण के प्रति संवेदनशील है।

इसी संदर्भ में डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय ने विश्वविद्यालय से सम्बद्ध स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों एवं कर्मचारियों के विगत माह का वेतन भुगतान न किये जाने पर नाराजगी जतायी है। ऐसे महाविद्यालय जिन्होंने अभी तक शिक्षकों एवं कर्मचारियों का वेतन भुगतान नहीं किया है और इसकी सूचना भी विश्वविद्यालय को उपलब्ध नहीं कराई है। उनके ऊपर उत्तर प्रदेश राज्य विश्वविद्यालय अधिनियम, 1973 की संगत धारा के तहत नियमानुसार कार्यवाही की जा सकती है। जिसका समस्त उत्तरदायित्व महाविद्यालय का होगा।

उत्तर प्रदेश शासन के आदेश पर विश्वविद्यालय ने स्ववित्त–पोषित महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों एवं कर्मचारियों के विगत माह के वेतन भुगतान के सम्बन्ध में 31 मार्च व 6 अप्रैल, 2020 को पत्र द्वारा अवगत कराया गया था। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 मनोज दीक्षित ने कोविड–19 के संक्रमण की रोकथाम एवं लॉकडाउन में शैक्षिक गतिविधियों के सन्दर्भ में महाविद्यालयों के प्राचार्यों एवं प्रबन्धकों के साथ वीडियो कांफ्रेंसिंग की थी जिसमें उनके यहां कार्यरत शिक्षकों एवं कर्मचारियों के वेतन शीघ्र भुगतान करने का आदेश दिया था लेकिन आज भी कुछ ऐसे महाविद्यालय है जिन्होंने वेतन भुगतान नहीं किया है और इसकी सूचना भी विश्वविद्यालय को नहीं दी है।

विश्वविद्यालय के उप–कुलसचिव विनय कुमार सिंह ने बताया कि लॉकडाउन में उत्तर प्रदेश शासन के आदेश पर शिक्षकों एवं कर्मचारियों के बिना कटौती के वेतन भुगतान किये जाने का आदेश प्राप्त हुआ था। इस सन्दर्भ में विश्वविद्यालय ने सभी स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों को वेतन भुगतान के सम्बन्ध में सूचना उपलब्ध करा दी गई है एवं इसकी सूचना विश्वविद्यालय की साइट पर भी लोड है। लेकिन कुछ महाविद्यालय प्रदेश शासन एवं विश्वविद्यालय के आदेश की अवहेलना कर रहे है। उत्तर प्रदेश राज्य विश्वविद्यालय अधिनियम, 1973 की संगत धारा के तहत नियमानुसार उन महाविद्यालयों के ऊपर कार्यवाही की जा सकती है। जिसका समस्त उत्तरदायित्व महाविद्यालय का होगा।

उपकुलसचिव ने बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा पुनः शासन के आदेश पर दिनांक 11 अप्रैल, 2020 को तत्काल प्रभाव से सभी महाविद्यालय शिक्षकों एवं कर्मचारियों के माह फरवरी व माह मार्च, 2020 के वेतन भुगतान सम्बन्धी कार्यवाही करते हुए वेतन भुगतान की आख्या प्रमाण सहित विश्वविद्यालय की ई–मेल आईडी registrar@rmlau.ac.in पर शीघ्र उपलब्ध कराएं। जिन महाविद्यालयों ने वेतन भुगतान सम्बन्धी सूचना विश्वविद्यालय को उपलब्ध करा दी है। उन्हें सूचना प्रेषित करने की आवश्यकता नहीं है।

•कोरोना वायरस के संक्रमण की रोकथाम एवं लॉकडाउन में ऑनलाइन शैक्षिक गतिविधियों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से कुलपति प्रो0 मनोज दीक्षित ने दिनांक 09 अप्रैल, 2020 को सम्बद्ध नर्सिंग कालेजों के प्राचार्यों के साथ वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से बैठक की।

•कोरोना वायरस के संक्रमण की रोकथाम के सम्बन्ध में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 मनोज दीक्षित ने सम्बद्ध अनुदानित महाविद्यालयों के प्राचार्यों एवं विश्वविद्यालय के अधिकारियों के साथ 3 अप्रैल 2020 को वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से बैठक की।

•कुलपति प्रो0 मनोज दीक्षित ने सम्बद्ध स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के प्राचार्यों एवं प्रबंधकों के साथ कोरोना वायरस से बचाव संबंधी उपायों एवं देशव्यापी लॉकडाउन में शैक्षिक गतिविधियां संचालित किये जाने के सम्बन्ध में 07 अप्रैल 2020 को वीडियो कांफ्रेंसिंग से बैठक की।

विश्वविद्यालय परिसर में ऋषभदेव जयन्ती का आयोजन

17 मार्च। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के श्री ऋषभदेव जैन शोधपीठ में ऋषभदेव जयन्ती का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर ऋषभदेव के व्यक्तित्व, कृतित्व एवं उनके उपदेश एवं शिक्षाओं पर आयोजित परिचर्चा में इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो0 नन्दकिशोर तिवारी ने भगवान ऋषभदेव की शिक्षाओं पर प्रकाश डालते हुए कहा कि भगवान ऋषभदेव जैन धर्म के प्रणेता हैं और हम सभी के लिए ये गौरव की बात है कि उनका जन्म अयोध्या की पावन धरती पर ही हुआ था। उन्होंने ऋषभदेव के द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त असि, मसि, कृषि, विद्या, वाणिज्य एवं शिल्प को विस्तार से वर्णित किया।

जैन शोधपीठ के समन्वयक डॉ0 देव नारायण वर्मा ने ऋषभदेव के सार्वभौमिक व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए जैन धर्म के सिद्धांतों के बारे में चर्चा की। इसी क्रम में विभागीय शिक्षक डॉ0संजय चौधरी और डॉ0दिवाकर त्रिपाठी ने भी अपने विचार रखे।

कार्यक्रम की शुरुआत में विभागाध्यक्ष प्रो0 तिवारी द्वारा ऋषभदेव की मूर्ति का जलाभिषेक कर माल्यार्पण किया गया एवं सभी विभागीय शिक्षकों एवं कर्मचारियों द्वारा ऋषभदेव की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित किया गया। परिचर्चा में विभाग के डॉ0 आलोक मिश्रा, डॉ0 देशराज उपाध्याय, डॉ0 मृदुला पाण्डेय, दिव्यव्रत सिंह, कैलाश चंद्र पाण्डेय, हरिराम, श्रवण सिंह एवं अन्य उपस्थित रहे।

रोजगार के लिए कम्युनिकेशन स्किल जरूरी: कुलपति

13 अप्रैल। देशव्यापी लॉकडाउन में डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 मनोज दीक्षित ने विश्वविद्यालय के परिसर के छात्र छात्राओं को "द–की रोल ऑफ कम्युनिकेशन स्किल्स इन द लाइफ ऑफ प्रोफेशनल्स" विषय जूम क्लाउड होस्टिंग एप प्लेटफॉर्म से व्याख्यान दिया। इस ऑनलाइन प्लेटफॉर्म से व्याख्यान में लगभग 250 छात्र–छात्राओं ने प्रतिभाग किया।

व्याख्यान को संबोधित करते हुए कुलपति प्रो0 मनोज दीक्षित ने कहा कि आज के जीवन के लिए कम्युनिकेशन स्किल अत्यंत आवश्यक है। कम्युनिकेशन एक ऐसा माध्यम है जो व्यक्ति के हाव–भाव और विचारों का वाहक होता है। यह क्षेत्रवार, राज्यवार और राष्ट्रीय स्तर पर भिन्न–भिन्न होता है। कुलपति ने दैनिक जीवन में बाबू शब्द का उदाहरण देते हुए कहा कि किसी विशेष क्षेत्र में बाबू का मतलब छोटा बच्चा होता है, तो किसी क्षेत्र में पिता, तो किसी कार्यालय में क्लर्क को बाबू कहा जाता है। यह इस बात को इंगित करता है कि वाक्य एक ही है किंतु क्षेत्रवार व समाजवार उसका अर्थ अलग अलग है और इसकी भिन्नता को समझना और समझाना ही कम्युनिकेशन है। उन्होंने कहा कि कुशल प्रतिभा के लिए कम्युनिकेशन बहुत अच्छा हो कोई जरुरी नहीं है लेकिन प्रतिभावान द्वारा बनाये टूल्स के लिए कम्युनिकेशन स्किल बहुत आवश्यक है। इंटरनेट का उपयोग होने के पश्चात पूरा विश्व जैसे सिमट गया है। एक देश से दूसरे देश की विशेषता, सुविधा हेरिटेज, तकनीकी इत्यादि से रोजगार के नए स्वरुप पूरे विश्व में आज उपलब्ध है। लेकिन ऐसे रोजगार के लिए कम्युनिकेशन स्किल बहुत जरूरी है। आज एक दूसरे के विचार को उनकी भाषा में जानने के लिए प्रोफेशनल्स की आवश्यकता है।

विश्वविद्यालय के मुख्य नियंता प्रो0 आर0एन0 राय ने छात्रों से कहा कि आज के समय में अपने को स्थापित करने के लिए कम्युनिकेशन स्किल्स की विशेष भूमिका होती है। इसके न होने से वह हर क्षेत्र में पीछे हो जाता है। इसलिए व्यक्ति को अपने स्किल्स को विकसित करने का प्रयास करना चाहिए।

आईईटी के निदेशक प्रो0 रामपति मिश्र ने बताया कि सेना में देश के हर कोने से जवान आते है और उनकी भाषा और बोली अलग अलग होती है किंतु अपनी कम्युनिकेशन स्किल को विकसित कर पूरे देश में आसानी से भ्रमण करते हुए अपनी सेवा देते है। उन्होंने बताया कि देश के कई रक्षा सौदा और संयुक्त सेना का अभ्यास, ट्रेनिग अलग–अलग देशों के साथ होती है तो इसमे कम्युनिकेशन स्किल्स की भूमिका बढ़ जाती है।

तकनीकी कार्यक्रम का संचालन इं0 रमेश मिश्र ने किया। कार्यक्रम में इं0 पारितोष द्वारा सभी प्रतिभागियों को जूम एप प्लेटफॉर्म द्वारा जोड़ा गया।

कार्यक्रम में प्रो0 अशोक शुक्ल, प्रो0 जसवंत सिंह, डॉ0 तुहिना वर्मा, डॉ0 सुरेन्द्र मिश्र, डॉ0 महेन्द्र पाल, डॉ0 सुधीर, डॉ0 प्रियंका श्रीवास्तव, डॉ0 महिमा चौरसिया, डॉ0 वंदिता पाण्डेय, डॉ0 बृजेश भारद्वाज, डॉ0 कविता श्रीवास्तव, डॉ0 संजीत पांडेय, इं0 विनीत सिंह, इं0 आस्था कुशवाहा, इं0 आशुतोष इं0 अखिलेश मौर्य, इं0 परिमल तिवारी, इं0 आशुतोष सहित संस्थान के छात्र–छात्राएं शामिल रही।

नियमों का पालन कर दुर्घटना से बचा जा सकता है : डॉ0 मिश्र

14 मार्च। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के समाज कार्य विभाग एवं उत्तर प्रदेश परिवहन विभाग के संयुक्त संयोजन में भारतीय सड़क सुरक्षा अभियान के तहत सड़क सुरक्षा जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए

सड़क सुरक्षा जागरूकता कार्यक्रम के नोडल अधिकारी डॉ0 विनय कुमार मिश्र ने बताया कि यातायात के नियमों का पालन कर सड़क दुर्घटनाओं से बचा जा सकता है। इसके पालन न करने से आए दिन दुर्घटनायें होती रहती है जिससे जान भी जाती है। इसलिए हम सभी का कर्तव्य एवं दायित्व बनता है कि यातायात के नियमों का पालन करते हुए अपने वाहन को निर्धारित गति सीमा में चलाये। डॉ0 मिश्र ने बताया कि वाहन चलाते समय मोबाइल का प्रयोग बिल्कुल नहीं करें। वाहन को सड़क पर ले जाने से पूर्व उसके फिटनेस की बराबर जांच कर लेनी चाहिए। डॉ0 मिश्र ने बताया कि उत्तर प्रदेश परिवहन विभाग की ओर से इस अभियान को नौ महीने तक चलाया जाना है। इसी के तहत विभाग द्वारा महीने में तीन बार अयोध्या जनपद के विद्यालयों में सड़क सुरक्षा जागरूकता कार्यक्रम चलाया जाएगा।

सड़क सुरक्षा जागरूकता कार्यक्रम की समन्वयक विभाग की छात्रा सपना शर्मा एवं सविता यादव ने बताया कि इस अभियान को गति प्रदान करने के लिए अयोध्या जनपद के विभिन्न विद्यालयों में क्विज, प्रदर्शनी, गोष्ठी, कार्यशाला, नुक्कड़ नाटक एवं रैलियों के माध्यम से लोगों को जागरूक किया जायेगा। कार्यक्रम का संचालन डॉ0 प्रज्ञा पाण्डेय ने किया। इस अवसर पर डॉ0 दिनेश कुमार सिंह, डॉ0 आलोक श्रीवास्तव, डॉ0 विवेक कुमार, मानवेन्द्र सहित बड़ी संख्या में छात्र–छात्राएं उपस्थित रही।

सभी भारतवासी महामारी से अनुशासित होकर मुकाबला करेंगे: प्रो0 दीक्षित

27 मार्च। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय द्वारा कोरोना वायरस के संक्रमण से बचाव के लिए जागरूकता की मुहिम चलाई जा रही है।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 मनोज दीक्षित ने यू–ट्यूब चैनल एवं विश्वविद्यालय के रक्षक एप के माध्यम से विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय शिक्षक संघ, कर्मचारी संघ, अभिभावकों एवं विद्यार्थियों से यह अपील की है कि देश में एक बेहद गंभीर महामारी के रूप में फैल रहे कोरोना वायरस से निपटने के लिए हम सभी को लॉकडाउन का कड़ाई से पालन करना होगा। लॉकडाडन में आप अपने घरों में रहे और एक लक्ष्मण रेखा मानकर उसे न पार करें। कुलपति ने बताया कि प्रधानमंत्री राष्ट्रीय राहत कोष में स्वैच्छिक अंशदान के लिए अयोध्या के जिलाधिकारी अनुज झा को एक पत्र के माध्यम से अवगत कराया कि इस राष्ट्रीय आपदा की घड़ी में अपने उत्तरदायित्व के बोध के साथ मेरे द्वारा 15 दिनों के वेतन को अंशदान के रूप में प्रदान किये जाने का संकल्प लिया गया है। इसी क्रम में विश्वविद्यालय के समस्त अधिकारियों, शिक्षकों एवं कर्मचारियों ने भी स्वेच्छा से अपने एक दिन का वेतन अंशदान के रूप में देने का संकल्प लिया है। कुलपति ने बताया कि समग्रता के साथ अंशदान की यह धनराशि लगभग दस लाख रूपए होने का अनुमान हैं। माह मार्च, 2020 देय अप्रैल, 2020 के वेतन से धनराशि की कटौती करते हुए संकल्पित धनराशि का चेक शीघ्र ही उनको उपलब्ध करा दिया जाएगा।

कुलपति ने बताया कि भारत अपनी संस्कृति और अनुशासन के लिए सदियों से जाना जाता रहा है हम सभी भारतवासी इस महामारी से अनुशासित होकर मुकाबला करेंगे और सभी नागरिक अपने घरों में रहकर भारत सरकार की इस अपील का पालन करेंगे। कोरोना वायरस का अभी तक कोई सटीक इलाज नहीं खोजा जा सका है ऐसी स्थिति में हम सभी का घरों में ही रहना एकमात्र इलाज है, इससे वायरस की चेन को तोड़ा जा सकता है इसी कारण 21 दिनों का लॉकडाउन घोषित किया गया है। 21 दिन का यह समय प्रत्येक भारतवासी के लिए एक बड़ी परीक्षा के रूप में है। हम आशा करते हैं कि इस परीक्षा में भारत पूरे विश्व में एक नई आभा के साथ निखरेगा। सभी विद्यार्थी, सभी कर्मचारी एवं शिक्षकगण प्रत्येक स्तर पर यह हर संभव कोशिश करें कि भारत सरकार के द्वारा खींची गई लक्ष्मणरेखा अपनी मर्यादाओं के साथ एक नई मिसाल बन सके।

कुलपति ने बताया कि विश्वविद्यालय अपने विद्यार्थियों के लिए ऑनलाइन अध्ययन सामग्री एवं पठन–पाठन का कार्य नियमित रूप से कर रहा है। विश्वविद्यालय विद्यार्थियों के लिए हर संभव प्रयत्न कर रहा है कि वे घरों पर रहकर अपने अध्ययन कार्य करते रहें। भारत सरकार के द्वारा जारी दिशा–निर्देशों का पालन भी करते रहें। अपरिहार्य कारणों से आवश्यकता पड़ने पर शिक्षक एवं कर्मचारी को सेनेटाइजेशन के प्रातोकाल का अनुपालन करते हुए बुलाया जा सकता है।